



आओ जाने जीव को



आओ जाने जीव को



मैं जीव हूँ।

मुझ में ज्ञान है।

मैं ज्ञान से जानता हूँ।





मौ ज्ञानानंद स्वभावी हूँ

आओ जाने जीव को



२. शरीर



शरीर अजीव है।

उस में ज्ञान नहीं है।

वह कुछ जानता नहीं है।

*

आओ जाने जीव को



मैं जीव हूँ। शरीर अजीव है।
 जीव में ज्ञान है। अजीव में ज्ञान नहीं है।
 मुझ में ज्ञान है। शरीर में ज्ञान नहीं है।
 मैं अपने ज्ञान से सबको जानता हूँ।
 शरीर किसी को नहीं जानता।
 जीव और शरीर अलग अलग हैं।

www.facebook.com/ekkadamniipathkior



www.facebook.com/ekkadamniipathkior

मैं ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ

अपनी निधी तो अपने में है, बाह्य वस्तु में व्यर्थ प्रयास
जग का सुख तो मृग तुच्छता है, झूठे है इसके पुरुषार्थ



*or Your Soul
Need for to be happy*



www.facebook.com/ekkadamniipathkior

आओ जाने जीव को



४. द्रव्य-गुण-पर्याय



मैं जीव-द्रव्य हूँ।

ज्ञान मेरा गुण है।

जानना मेरी पर्याय है।

जीव-द्रव्य में ज्ञान-गुण है।

अजीव-द्रव्य में ज्ञान-गुण नहीं है।

जीव-द्रव्य जानता है।

अजीव-द्रव्य नहीं जानता।

✱



आओ जाने जीव को



बालको !

बताओ तुम कौन हो ?—जीव जीव जीव।

तुम्हारे में क्या है ?—ज्ञान ज्ञान ज्ञान।

तुम क्या करते हो ?—जानते हैं जानते हैं जानते हैं

शरीर कौन है ?—अजीव अजीव अजीव।

क्या उसमें ज्ञान है ?—ना ना ना।

क्या वह किसीको जानता है ?—ना ना ना।

क्या शरीर तुम्हारा है ?—ना ना ना।

क्या शरीर का काम तुम करते हो ?—ना ना ना।





बालको !

बताओ तुम कौन हो?—

तुम्हारे में क्या है?—

तुम क्या करते हो?—

शरीर कौन है?—

क्या उसमें ज्ञान है?—

क्या वह किसीको जानता है?—

क्या शरीर तुम्हारा है?—

क्या शरीर का काम तुम करते हो?—

आओ जाने जीव को



६. हाँ और ना



बताओ—

तुम जीव हो ? —हाँ हाँ हाँ।

शरीर जीव है ? —ना ना ना।

तुम्हारे में ज्ञान है ? —हाँ हाँ हाँ।

शरीर में ज्ञान है ? —ना ना ना।

तुम सबको जानते हो ? —हाँ हाँ हाँ।

शरीर कुछ जानता है ? —ना ना ना।

तुम शरीरको जानते हो ? —हाँ हाँ हाँ।

तुम शरीरका काम करते हो ? —ना ना ना।

तुम्हें सुखी होना है ? —हाँ हाँ हाँ।

तुम्हें दुःखी होना है ? —ना ना ना।

तुम आत्माको पहिचानोगे ? —हाँ हाँ हाँ।

तुम अज्ञानी रहोगे ? —ना ना ना।

आओ जाने जीव को

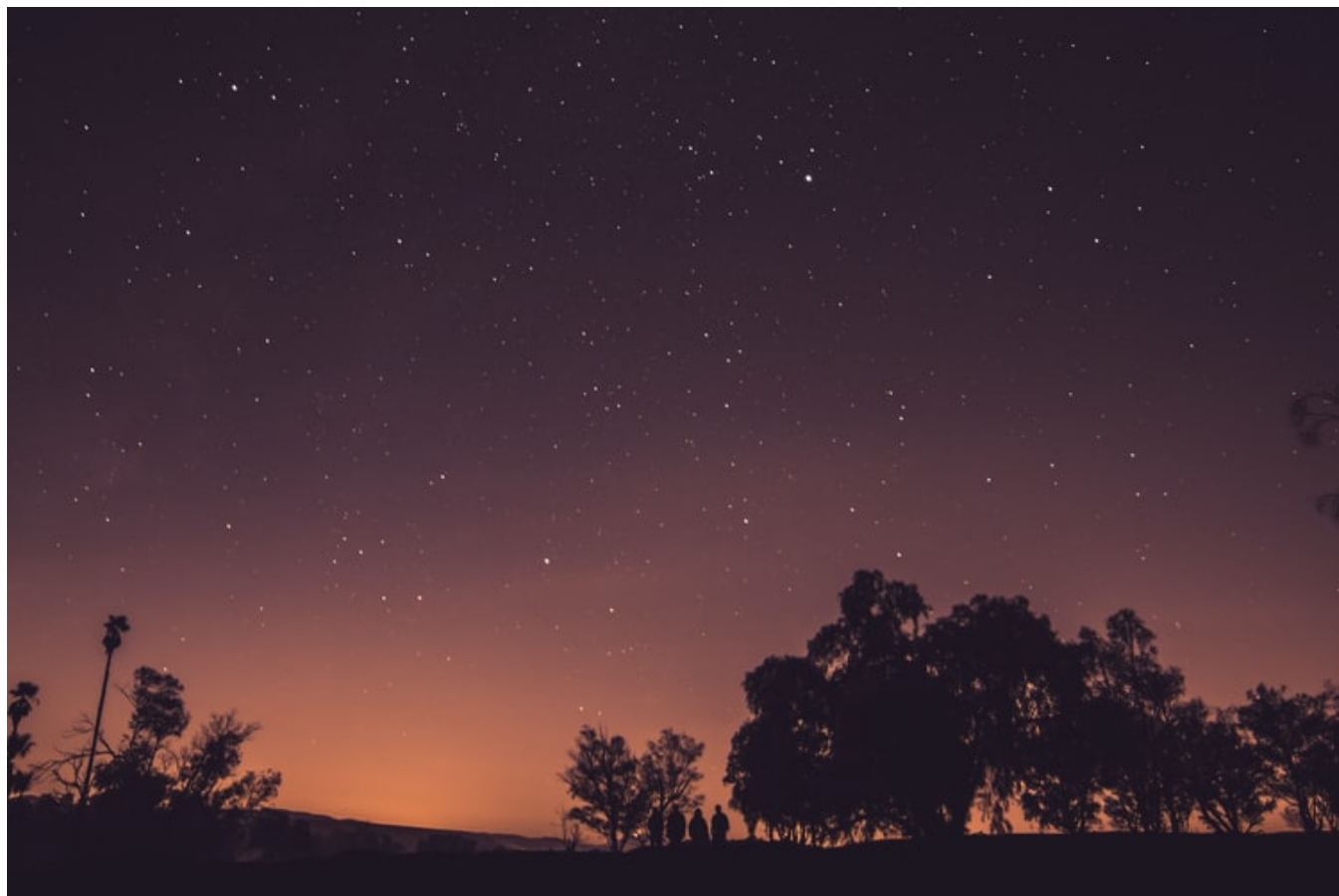




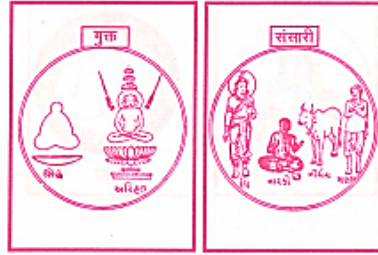
यह समयसार है। वह एक शास्त्र है।
 शास्त्र आत्माको समझाते हैं।
 ज्ञानी जिसकी रचना करें वह शास्त्र है।
 शास्त्र से आत्माकी पहिचान होती है।
 शास्त्र में ज्ञान नहीं है। वह कुछ जानता नहीं है।
 जीव में ज्ञान है। जीव सब कुछ जानता है।
 समयसार-शास्त्र बहुत अच्छा है।
 इससे आत्माका ज्ञान होता है।
 कुन्दकुन्द-आचार्यने इसकी रचना की है।
 सदा शास्त्रका दर्शन और स्वाध्याय करना चाहिए।
 शास्त्रको जिनवाणी कहते हैं।



आओ जाने जीव को



*** १८. मुक्त और संसारी ***



जीव दो तरह के हैं—एक मुक्त और दूसरे संसारी।
 मुक्त जीव शुद्ध हैं, संसारी जीव अशुद्ध हैं।
 मुक्त जीव मोक्षमें रहते हैं, वे पूरे सुखी हैं।
 उनके राग-द्वेष नहीं होते, उनके जन्म-मरण नहीं होते।
 वे कभी संसारमें नहीं आते, वे दूसरोंका कुछ नहीं करते।

सिद्ध भगवान् मुक्त जीव हैं।
 अहिंसे भगवान् भी जीवन्मुक्त हैं।

संसारी जीवोंको जन्म-मरण होते हैं।
 स्वर्ग के जीव संसारी हैं, नरक के जीव संसारी हैं।
 तिर्यच के जीव संसारी हैं, मनुष्य के जीव भी संसारी हैं।
 संसारी जीव दुःखी हैं; मुक्त जीव सुखी हैं।
 आत्माको न पहिचाने तब तक जीव संसारमें रुलता है।
 यदि आत्मा को पहिचाने तो अवश्य मुक्ति पाता है।

*

जीव अजीव की एक और पहचान



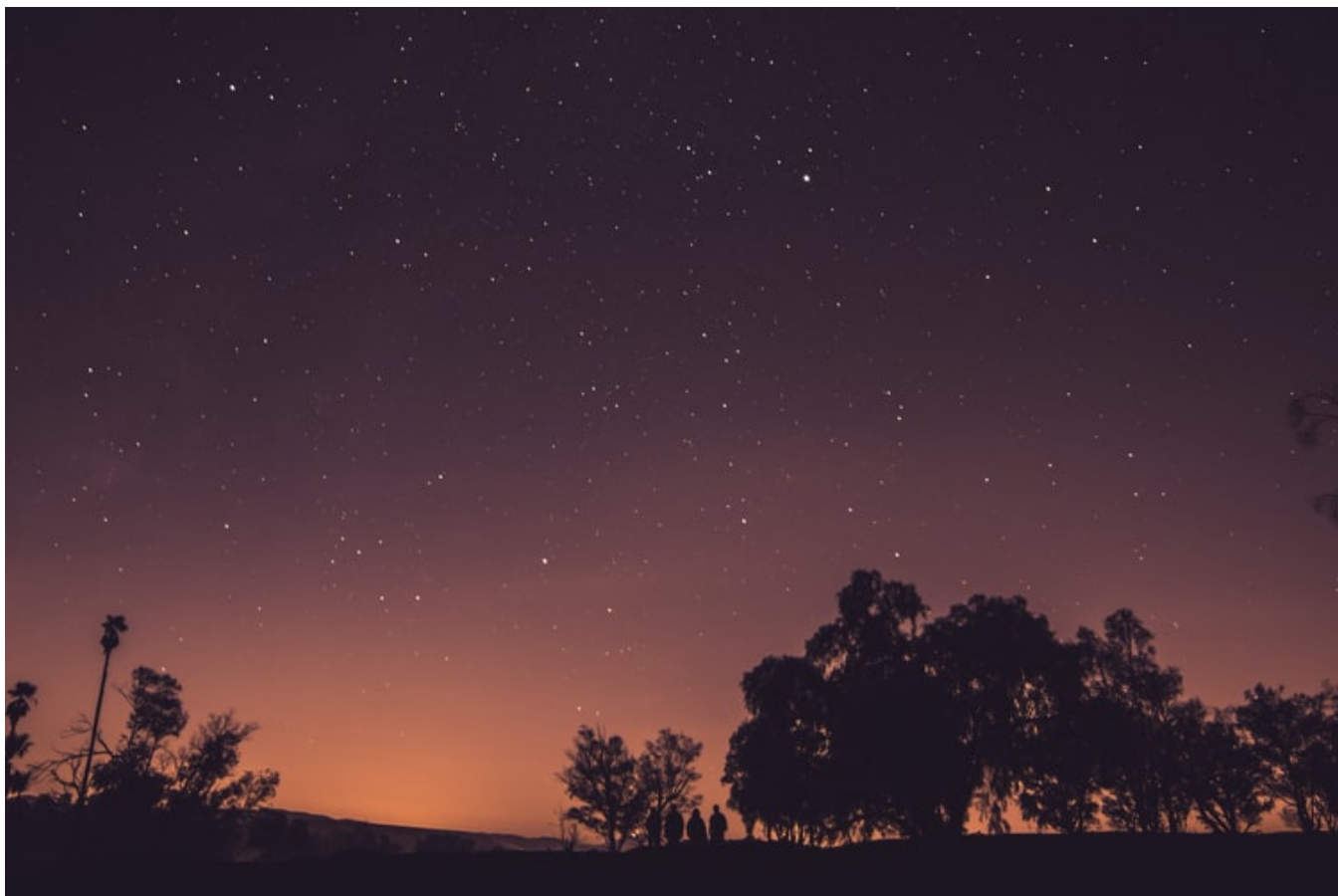
हीरालाल - जीव-अजीव की और क्या पहिचान है ?

ज्ञानचन्द - जीव सुख व दुःख का अनुभव करता है, अजीव में सुख-दुःख नहीं होता। हम तुम सुख-दुःख का अनुभव करते हैं,



ये (टेबल और शरीर) अजीव हैं। अतः जीव हैं। टेबल, कुर्सी सुख-दुःख का अनुभव नहीं करते, अतः अजीव हैं।

जीव को जानने से लाभ



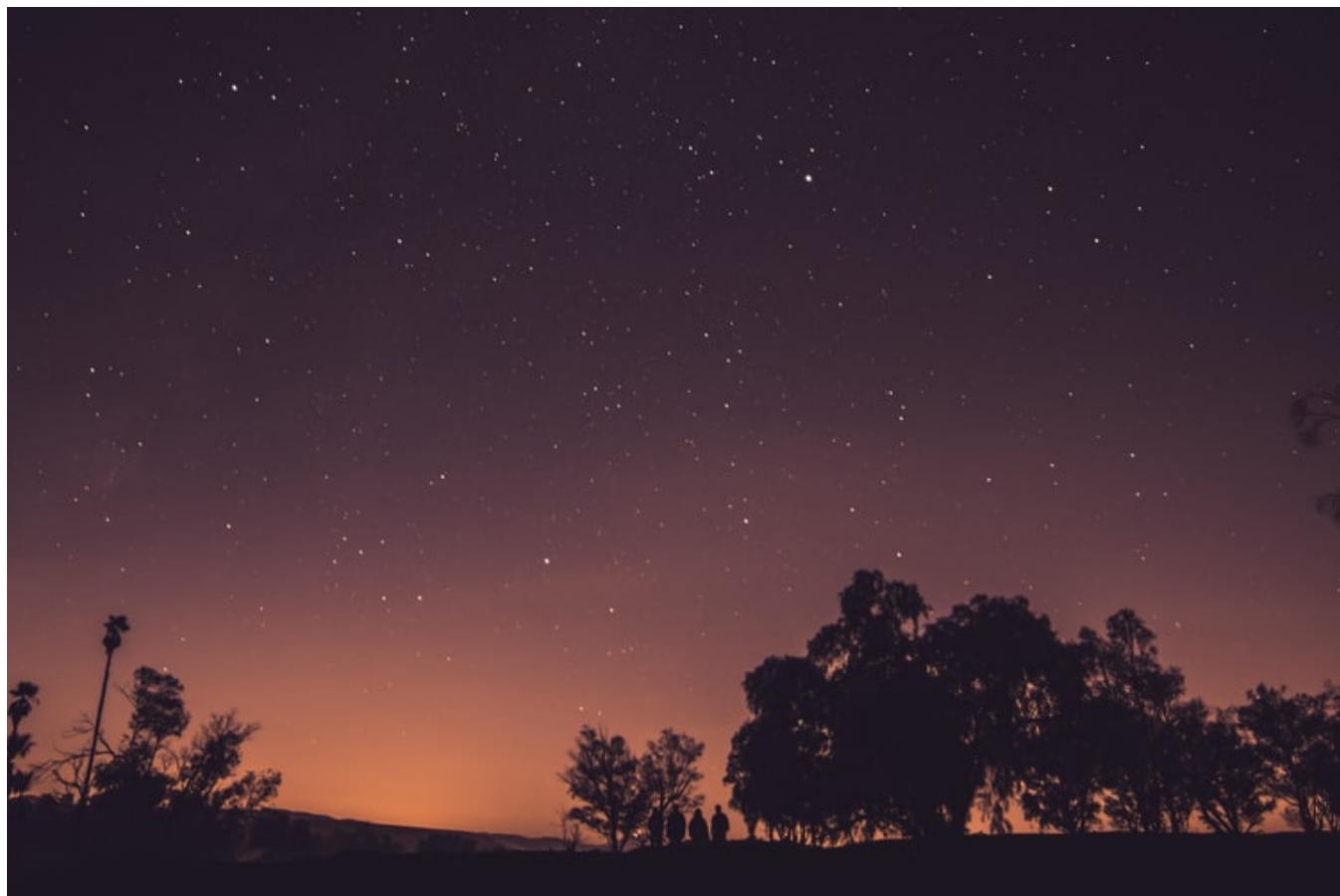
मुझ में ज्ञान है।
शरीर में ज्ञान नहीं है।
मैं जानता हूँ।
शरीर कुछ जानता नहीं है।



- ज्ञानचन्द - समझ गये तो बताओ,
हाथी जीव है या अजीव ? मैं जीव हूँ।
- हीरालाल - जैसे हमारा शरीर अजीव है, वैसे ही हाथी आदि
सब जीवों का शरीर भी अजीव है, पर उनकी
आत्मा तो जीव ही है।
यह समझ तो लिया, पर इसके जानने से
लाभ क्या है ? यह भी तो बताओ।
- ज्ञानचन्द - इसको जाने बिना आत्मा की सच्ची पहिचान नहीं
हो सकती और आत्मा की पहिचान बिना सच्चा
सुख नहीं मिल सकता तथा हमें सुखी होना है,
इसलिए इनका ज्ञान करना भी आवश्यक है।
जीव-अजीव का ज्ञान कर हम स्वयं भगवान
बन सकते हैं।

गेंद खेलने में

सुख मिलता है या नहीं



प्रश्न :— तो सुख किसमें है ?

उत्तर :— सुख जीवमें है ।

प्रश्न :— जीव और गेंदमें क्या अंतर है ?

उत्तर :— जीवमें ज्ञान है; गेंदमें ज्ञान नहीं है ।

प्रश्न :— तो क्या इस जगतमें दो तरहकी वस्तुएँ हैं ?

उत्तर :— हाँ; एक ज्ञानसहित, दूसरी ज्ञानरहित, ऐसी दो प्रकारकी वस्तुएँ हैं ।

जिस वस्तुमें ज्ञान हो उसे 'जीव' कहते हैं ।

जिस वस्तुमें ज्ञान न हो उसे 'अजीव' कहते हैं ।

एक कुंवर कवि था, उसने तुरन्त ही जीव-अजीवका काव्य बनाकर सबको सुनाया :—

जीव समझना उसको जिसमें होता ज्ञान ।

अजीव जानो उसको होय न जिसमें ज्ञान ।

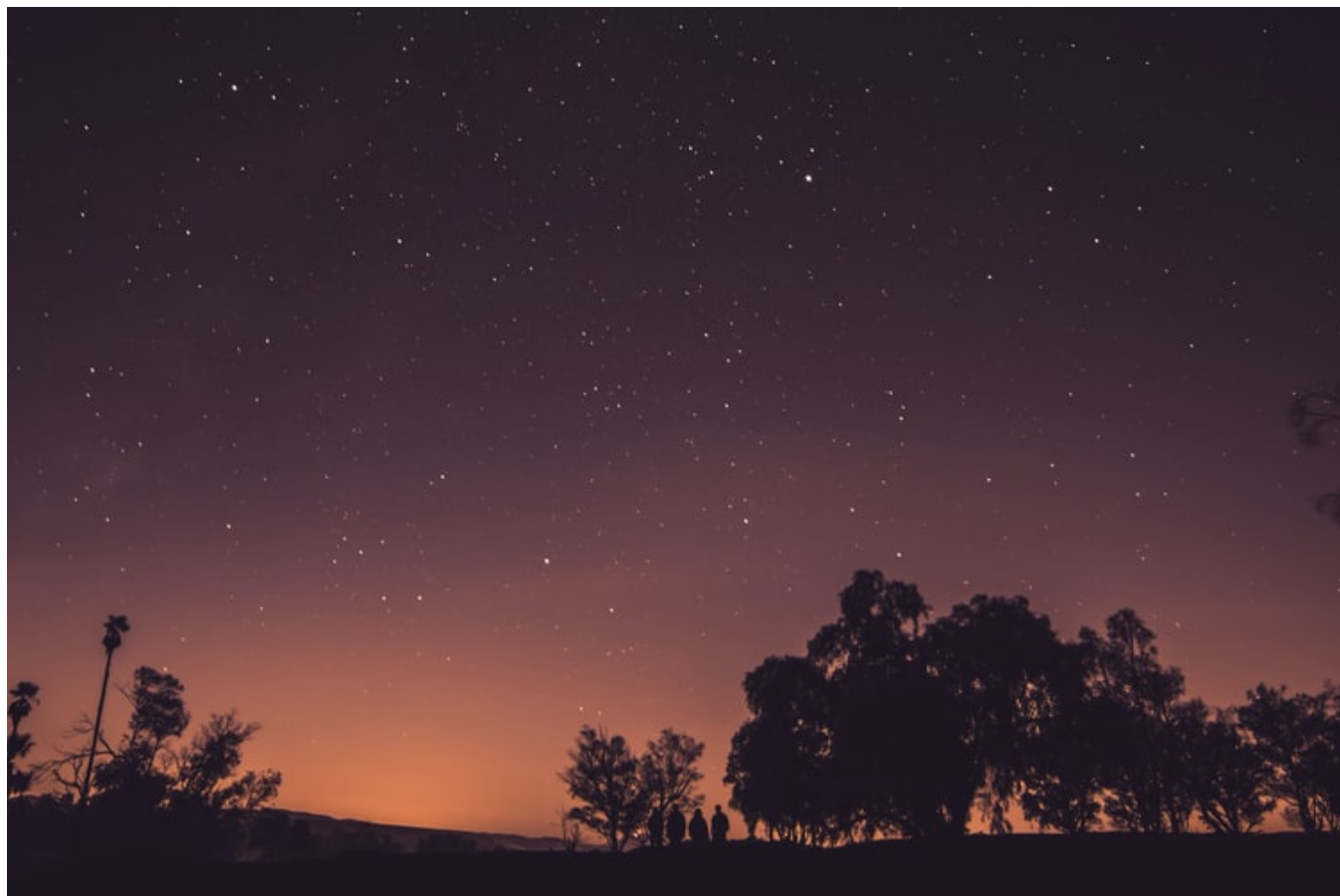
जीव-अजीवको जानके कर लो आत्मज्ञान ।

होगी आत्मज्ञानसे पदवी मोक्ष महान ।।

रविकीर्ति :— जीव वस्तुमें ज्ञानके सिवा और भी कुछ है ?

जीव कौन है ?

जो सुख दुख का अनुभव कर्ता है वह जीव है



कर्म बलवान है या जीव ?

पुण्य के उदय से सबकुछ मिलता है तो क्या कर्म बलवान है?

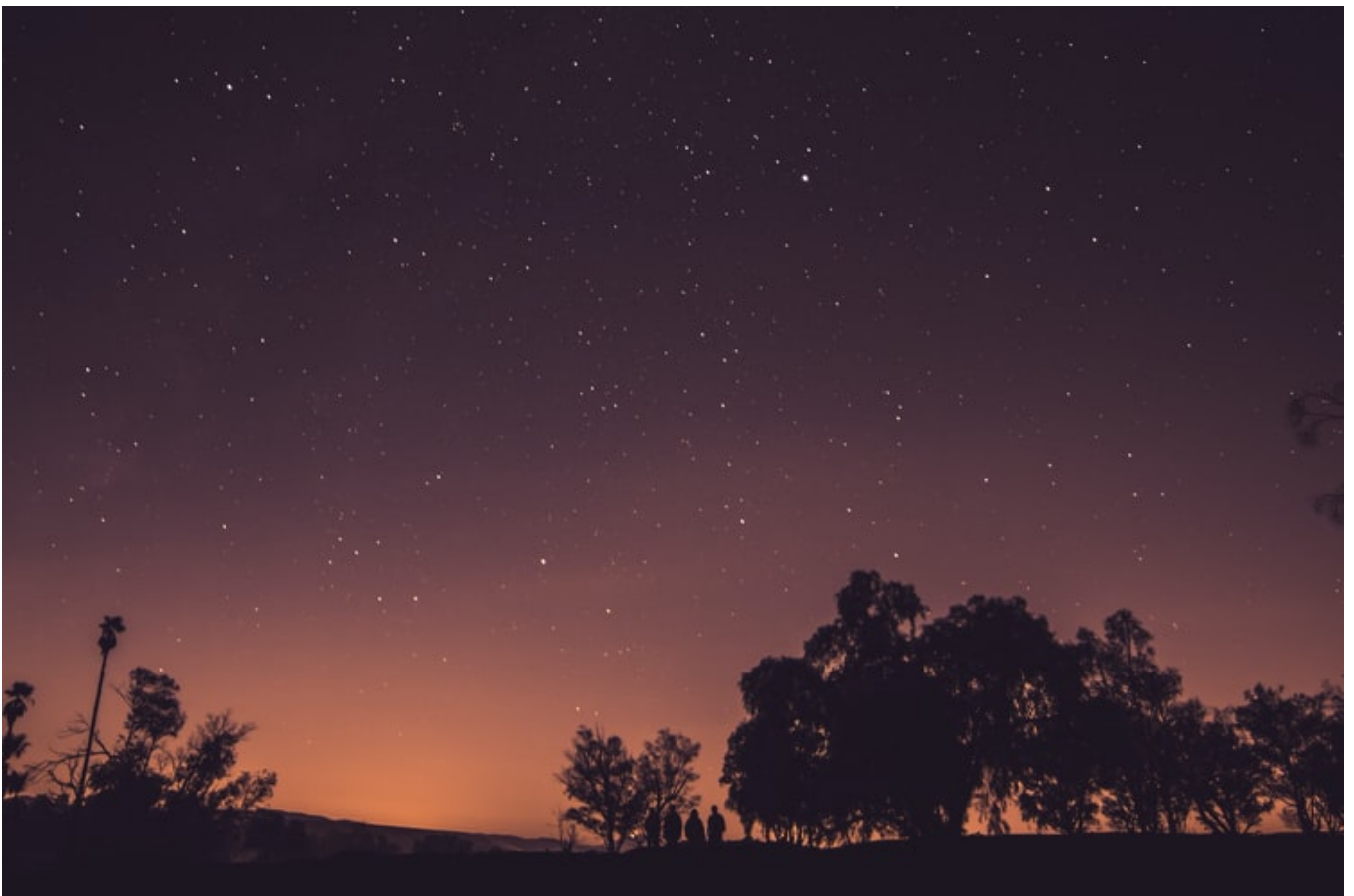
पाप के उदय में प्रतिकूलता मिलती है जीव दुखी होता है तो क्या कर्म बलवान है?

पारस नाथ मुनिराज को भी कर्मों ने नहीं छोड़ा तो क्या कर्म बलवान है ?

कर्म के उदय से सब भूल जाते है तो क्या कर्म बलवान है

पुण्य के उदय से सबकुछ मिलता है लेकिन जीव का ज्ञान होने से केवलज्ञानी हो जाते है अतः जीव
पाप के उदय में प्रतिकूलता मिलती है पर स्वाभाव सन्मुख होने पर प्रतिकूलता भासित ही नहीं होती
पारस नाथ मुनिराज को भी कर्मों ने नहीं छोड़ा फिर भी कर्मों का नाश किया अतः जीव बलवान है
|

कर्म के उदय से सब भूल जाते है पर जीव का ज्ञान होने पर केवलज्ञानी हो जाते है अतः जीव
बलवान है |



कर्म बलबान है या जीव ?

कर्म विचरे कौन भूल मेरी अधिकाई

अग्नि सहे घनघोर लोग की संगती पाई

कर्म का उदय आया तो ये कोरोना की

स्थिति बनी तो क्या कर्म बलबान है?



कर्म बलवान है या जीव ?

अनंत कर्म एक साथ बंधे फिर ही जीव को कुछ नहीं होता

उनसे बचके निकल जाता है तो कौन बलवान हुआ

जीव या कर्म?

1000 पुलिस वाले हो और एक आदमी उनसे

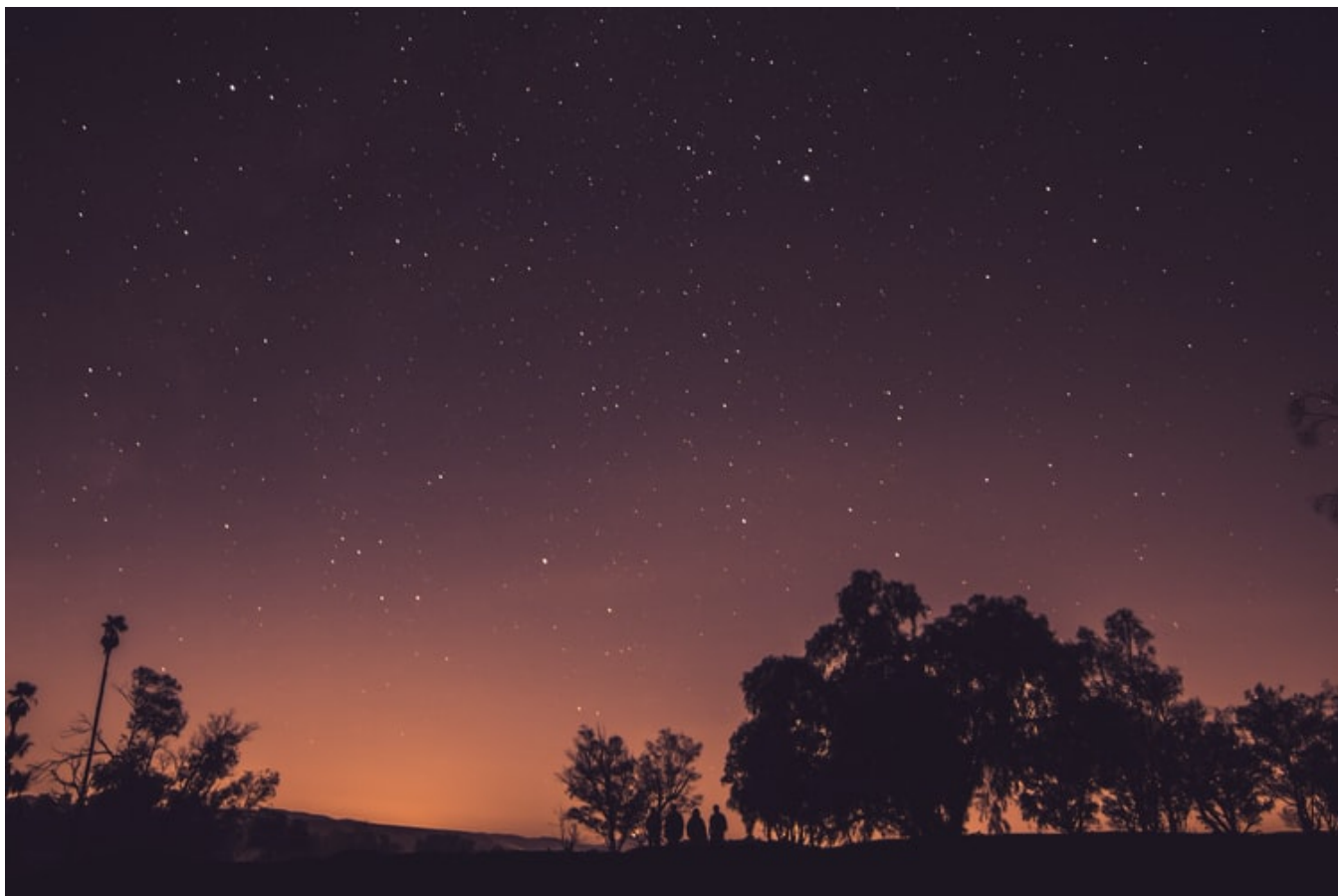
उनसे बच के निकल जाये तो कौन बलवान?



कर्म बलवान है या जीव ?
बलवान तो जीव ही है
स्वाभाव की कमजोरी के
जीव को ना जानने के कारण
कर्म बलवान दिखने लगते है



आओ जाने जीव को



१६. जीव और कर्म



कर्म



जीव

कर्म अजीव हैं।

कर्म में ज्ञान नहीं है।

जीव में ज्ञान है।

जीव और कर्म अलग अलग हैं।

जीव में कर्म नहीं है।

कर्म में जीव नहीं है।

जीव अज्ञान से हैरान होता है।

कर्म जीव को हैरान नहीं करते।

जीव अपनी भूलसे दुःखी होता है।

कर्म जीवको दुःखी नहीं करते।

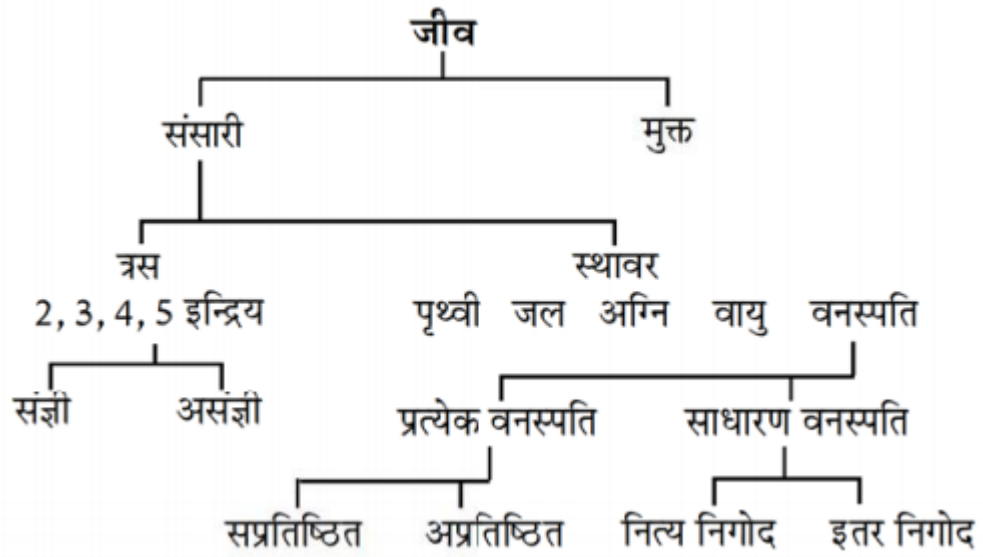
जीवकी पहचान करना चाहिये।

कर्मका दोष नहीं निकालना चाहिये।

जीव को पहचानना धर्म है।

कर्म का दोष निकालना अधर्म है।

*



आओ जाने जीव को



Vitrag X Vitrag X Vitrag X Badhi X Badhi X Badhi X Badhi X Balbo X 55_hi X https X https X PDF:1 X +

vitragvani.com/uploads/pdfs/F/Badhte_Charar_2nd-Standard_H.pdf

34

मेरा धाम

शुद्धात्म है मेरा नाम,
मात्र जानना मेरा काम।
मुक्तिपुरी है मेरा धाम,
मिलता जहाँ पूर्ण विश्राम॥
जहाँ भूख का नाम नहीं है,
जहाँ प्यास का काम नहीं है।
खौंसी और जुखाम नहीं है,
आधि व्याधि का नाम नहीं है॥
सत् शिव सुन्दर मेरा धाम,
शुद्धात्म है मेरा नाम॥१॥
स्व-पर भेदविज्ञान करेंगे,
निज आत्म का ध्यान धरेंगे।
राग-द्वेष का त्याग करेंगे,
चिदानन्द रसपान करेंगे॥
सब सुखदाता मेरा धाम,
शुद्धात्म है मेरा नाम॥२॥

Type here to search

1603
04-05-2020

आओ जाने जीव को



Vitrag X Vitrag X Vitrag X Badhi X Badhi X Badhi X Badhi X Balbo X 55_hi X https X https X PDF:1 X + - X

vitragvani.com/uploads/pdfs/F/Badhte_Charan_2nd-Standard_H.pdf

जीव

द्रव्य छह होते हैं।
जिसमें चेतनागुण पाया जाता है
अर्थात् जो जानता-देखता है,
वह जीवद्रव्य है।

जिसमें स्पर्श, रस, गन्ध और
वर्ण पाये जाते हैं, उसे
पुद्गलद्रव्य कहते हैं।

पुद्गल

द्रव्य

3

Type here to search

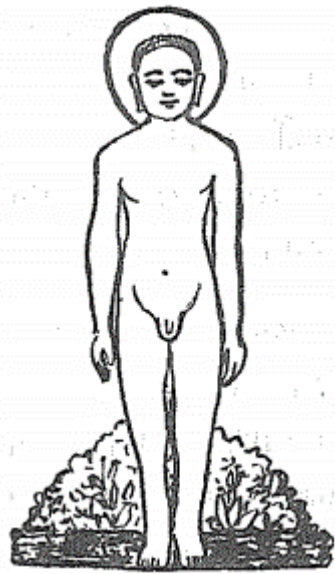
16:01 04-05-2020

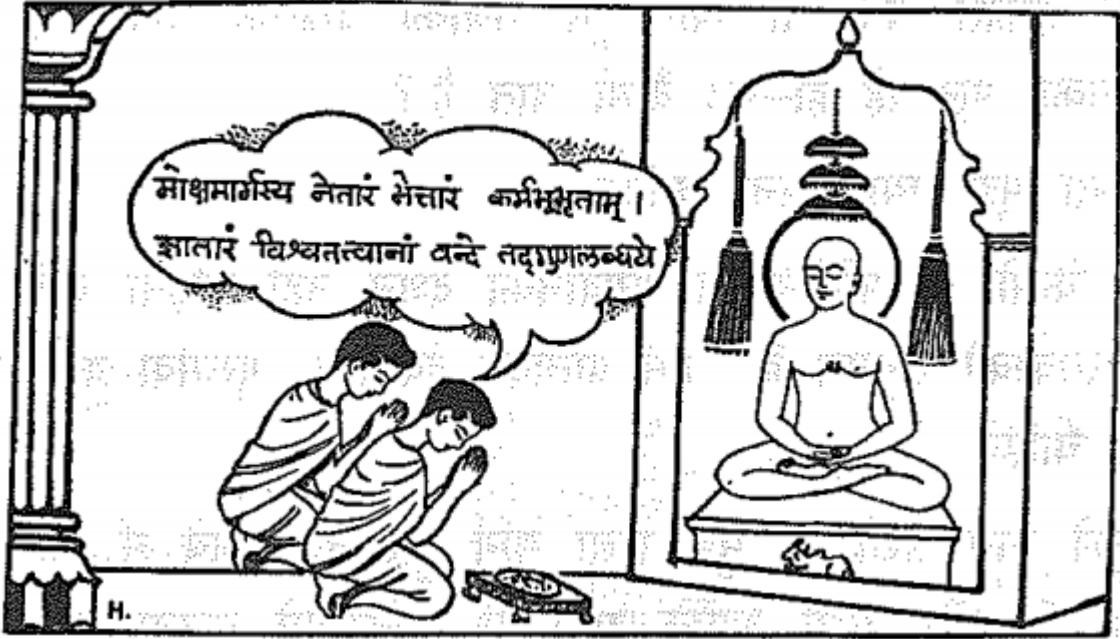
पांचो परमेष्ठी में से

जीव कितने है और अजीव कितने?









जीव किसे कहते हैं ?

जिसमें चेतना गुण पाया जाता है

उसे जीव कहते हैं





(दूहा-६)

ति-पयारो अप्पा मुणहि, परु अंतरु बहिरप्पु ।

पर झायहि अंतर-सहिउ, बाहिरु चयहि णिभंतु ॥

(हरिगीत)

बहिरातमापन त्याग जो बन जाय अन्तर-आतमा ।

ध्यावे सदा परमातमा बन जाय वह परमातमा ॥

आत्मा तीन प्रकार का है - परमात्मा, अन्तरात्मा और बहिरात्मा ।
इनमें से अन्तरात्मा होकर परमात्मा का ध्यान करो और भ्रान्ति-रहित
होकर बहिरात्मा का त्याग कर दो ।

